रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १४: सेतु बंध (तब्दीली का पुल)

'सेतु बंध', तब्दीली का पुल, रूपक के तौर पर सच्ची जीत की नुमाइंदगी करता है, जो संसारिक महासागर को नाकारत्मक से सकारात्मक पक्ष की तरफ पार करने में मदद करता है। गुरु नानक संगलादीप से धनुषकोडी गये।

दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥
संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥
सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

गहरी नींव खोदकर भवन की दीवारों का निर्माण किया जाता है। इसके बावजूद अंततः इमारतें मिट्टी का ढेर बन जाती हैं।
लोग माल-असबाब जमा करते हैं और दूसरों के साथ कुछ भी सांझा नहीं करते।
वह इस यकीन मे अंधे रहते हैं कि सब कुछ हमेशा साथ ही रहेगा। सोने की लंका भी आख़िर में किसी के साथ नहीं रही।
(राग गौड़ी चेती, गुरु नानक)

कुदरत ने बार-बार हालात पैदा करके हमें समझाया है कि जीवन गतिमान है। नैतिक कहानियों ने हमें सभी प्रजातियों की ऐकता और आपसी संबंध को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करने के लिये निर्देशित किया है लेकिन मनुष्य का जिद्दी दिमाग बार-बार 'मैं' और 'मेरा' के संघर्ष में फंस जाता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना नागापट्टिनम से समुंद्री जहाज़ के रास्ते श्रीलंका के बंदरगाह वाले शहर जाफना में पहुंच गये।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से समुद्र के रास्ते श्रीलंका से इंडिया की यात्रा करना नामुमकिन है। इसलिये हम ने हवाई जहाज़ में इंडिया से श्रीलंका के लिये उड़ान भरी और जाफना से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ाया।

'विलायतवाली जन्मसाखी' के अनुसार, गुरु नानक ने श्रीलंका के सफ़र के दौरान अपना सिर रस्सियों से ढका हुआ था, पैरों में खडाँऊ पहनी थी और माथे पर सिंदुर का तिलक लगाया हुआ था। गुर नानक जानबूझकर ऐसा लिबास पहनते थे जिससे लोगों के लिये उनकी मज़हबी पहचान करना मुश्किल हो जाये। शायद इससे लोगों में जिज्ञासा जगती होगी और उनके लिये विभिन्न पृष्ठभूमि वाले रूहानियत के साधकों के साथ संवाद करना आसान होता होगा।

अमरदीप सिंह: जाफना। यह श्रीलंका का वह शहर है जहां गुरु नानक और भाई मरदाना सबसे पहले पहुंचे थे। इस शहर को उस समय 'जापापट्टनम' कहा जाता था। इसी शहर से उन्होंने अपना सफ़र शुरू किया और श्रीलंका के पूरे द्वीप की यात्रा की। भाई मनी सिंह की जन्मसाखी के अनुसार उन्होंने श्रीलंका में दो साल और पांच महीने बिताये।

श्रीलंका में प्रवेश करने के बंदरगाह वाले शहर जाफना में गुरु नानक के आगमन की कोई यादगार नहीं है।

पंद्रहवीं शताब्दी में श्रीलंका में बौद्ध मज़हब का बोलबाला था। इस द्वीप के उत्तर-पूर्वी हिस्से में कुछ क्षेत्रों में भगवान शिव की पूजा करने वाले हिंदू आबाद थे।

गुर नानक और भाई मरदाना ने जाफना से समुद्र के किनारे-किनारे त्रिंकोमाली, बैटीकलोअ और कुरुकल्लमडम का सफ़र किया। इसके बाद वे कतरगामा, नुवारा एलिया, सीतावाका और कोलंबो के बाहर-बाहर होते हुये अनुराधापुरा के रास्ते मन्नार पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले जाफना से त्रिंकोमाली का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर जाफना से पूर्वी तट पर त्रिंकोमाली जा रहे हैं।

यह तटीय शहर 'शिव मत' के ऐतिहासिक मंदिर के लिये प्रसिद्ध था। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि वह मंदिर सोलह सौ बाईस में पुर्तगालियों द्वारा ध्वस्त कर दिया गया था। यह यकीन से तो नहीं कहा जा सकता है लेकिन यह मुमकिन है कि गुरु नानक इस शहर से गुज़रते हुये इस स्थान पर आये हों।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने त्रिंकोमाली से दक्षिण की ओर बैटीकलो का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर त्रिंकोमाली से समुद्र किनारे दक्षिण की ओर तटीय शहर बैटीकलो जा रहे हैं। इस शहर को पंद्रहवीं सदी में मटियाकलाम कहा जाता था।

उस समय श्रीलंका के उत्तर-पूर्वी भाग पर बैटीकलो के राजा पररराजशेखरन का शासन था। जन्मसाखी साहित्य में राजा का नाम 'शिव नाभ' के रूप में दर्ज है जो इशारा करता है कि वह भगवान शिव के भक्त थे।

अमरदीप सिंह: मनसुख नाम का सौदागर अकसर व्यपार के सिलसिले में लाहौर से श्रीलंका आता-जाता रहता था। इस द्वीप पर अपने प्रवास के दौरान उन्होंने राजा शिव नाभ को गुरु नानक और उनके फ़लसफ़े का ज़िक्र किया था।

'विलायतवाली जन्मसाखी' और 'भाई मनी सिंह वाली जन्मसाखी' में ज़िक्र है कि राजा शिव नाभ ने गुरु नानक की विश्वसनीयता का परीक्षण करने के लिये गुरु नानक को बहकाने के लिये मोहक लड़कियों को भेजा था। जब उन लड़कियों का गुरु नानक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, तो राजा शिव नाभ को विश्वास हो गया कि यह मनसुख द्वारा बताये गये प्रिय संत हैं। उसके बाद पूरे सत्कार के साथ राजा स्वयं गुरु नानक के स्वागत के लिये हाज़िर हुआ।

गुरु नानक के निराले लिबास को देखकर, शिव नाभ के मन में जिज्ञासा हुई तो उन्होंने पूछा कि क्या वह जोगी हैं या पंडित, और उनकी जाति क्या है। राजा की रूहानी सोच को उभारने के लिये गुरु नानक ने पूछे गये सामाजिक पदानुक्रम से संबंधित सवाल के उत्तर में विचारोत्तेजक सवाल पूछे।

जोगी जुगत नाम निरमाइल ता कै मैल न राती ॥
प्रीतम नाथ सदा सच संगे जनम मरण गत बीती ॥१॥
गुसाई तेरा कहा नाम कैसे जाती ॥
जा तउ भीतर महल बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

वह जोगी है जिसके पास सोच-विचार करने की क्षमता है। जो ईमानदार है और मैल का एक कण भी उसे छू नहीं सकता।
हे प्यारे प्रीतम नाथ सच की संगति में जन्म-मरण की वासनाओं से ऊपर उठो।
हे कायनाती हाज़रा-हज़ूर आपकी महानता को कौन समझ सकता है?
यदि आप चेतना को अपने मन की महलों में बुलाते हैं तो ऐकता की सोच का प्रवाह लगातार चलता है।
(राग मारू, गुरु नानक)

किसी का दुनियावी रुतबा उसके मिज़ाज़ का मानक नहीं हो सकता। गुरु नानक ने सवाल किया कि ज़ाहरा रूप से सृजनहार और उसकी सृजना का कैसे वर्गीकृत किया जा सकता है क्योंकि वह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। पहचान की बुनियाद पर बनी समझ ऐसी प्रवृत्तियां पैदा कर सकती है जो सामाजिक इत्तेफ़ाक को कमज़ोर कर सकती हैं।

गुरु नानक ने सुझाव दिया कि मतभेदों के बजाय ऐकता पर ध्यान देना चाहिये।

राजा शिव नाभ के साथ कुछ दिन बिताने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना ने दक्षिण की ओर कुरुकल्लमडम गांव का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर कुरुकल्लमडम गांव जा रहे हैं।

सफ़र व्यक्ति को ऐसे अवसर प्रदान करता है जो उसके सुविधा क्षेत्र से परे हैं। हर सफ़र इंसान को निराले अनुभवों से रूबरू कराता है जिसके जरिये एक नये तरीके से सोचने का मौका मिलता है और मानव प्रगति के द्वार खुलते हैं। इन अवसरों का लाभ उठाने के लिये, इनसे मिले सबक को अपनाना महत्वपूर्ण है ताकि एक ओर उनका आत्म-परीक्षण किया जा सके और दूसरी ओर उन्हें दूसरों के लाभ के लिये सांझा किया जा सके। जैसा कि गुरु नानक ने कहा,

जे गुण होवन साजना मिल साझ करीजै ॥
(गुरु नानक)

ओ दोस्त, यदि कोई लाभकारी तजुर्बा हुआ है तो दूसरों के साथ सांझा करें।
(गुरु नानक)

बस के इस संवाद और विचार रंजित सफ़र के बाद हम पैदल, पुरसुकून गांव कुरुकल्लमडम जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: कुरु का अर्थ है गुरु। 'कल' का अर्थ है सम्मान और 'माडम' का अर्थ संगत है। ऐसा माना जाता है कि बैटीकलो से गुरु नानक इस गांव में आये थे और यहां कुछ दिन ठहराव किया था। हम इस गांव के निवासी कोनेस्वरन के घर जा रहे हैं। हम उनसे मिलकर पता करेंगे कि गुरु नानक के इस गांव में आने से जुड़ी किस तरह की यादें मौजूदा दौर तक पहुंची हैं।

कोनेस्वरन: आपका स्वागत है[

अमरदीप सिंह: कोनेस्वरन जी, आप कैसे हैं?

कोनेस्वरन: मैं ठीक हूं।

अमरदीप सिंह: आप से मिलकर ख़ुशी हुई।

कोनेस्वरन: जी, मुझे भी खुशी हुई। शुक्रिया। आओ जी।

उनके परिवार के साथ पूजा में शामिल होकर हम बहुत खुश हैं। यह एक अद्भुत अनुभव है।

कोनेस्वरन: आज पोंगल का पर्व है। हम सूर्य को धन्यवाद देते हैं और यहीं से 'अवतरण' की शुरुआत होती है। हम सूर्य का सम्मान करते हैं।

पूजा के बाद इस परिवार ने उत्सव मनाने के लिये हमें दावत दी है।

अमरदीप सिंह: कोनेस्वरन और उनके परिवार के साथ पूजा के बाद उनकी दावत का 'प्रसाद' रूह को सुकून देने वाला है।

कोनेस्वरन: मेरे नाना जी ने मुझे बताया था कि गुरु नानक देव जी यहां आये थे और वह कातरगामा जाने से पहले दो महीने यहां रुके थे। तामिलनाडु और इंडिया के लोग कटारगम में इबादत करने जाने के लिये इस मार्ग से जाते हैं।

कोनेस्वरन हमें कुरुकल्लमडम के ऐतिहासिक सेलाई कातरगामम मंदिर ले गये। सदियों से, श्रीलंका के दक्षिणी हिस्से में स्थित कातरगामा शहर को जाने वाले तीर्थयात्री इस मंदिर में पड़ाव करते थे।

अमरदीप सिंह: यहां मुरुगन, भगवान शिव के पुत्र की पूजा की जाती है। जब गुरु नानक ने ku{~lmfm में ठहराव किया तो इस इलाके में 'शिव' मत का प्रभाव था। इस इलाके के राजा शिव नाभ ने गुरु नानक का स्वागत किया। शिव नाभ भगवान शिव और भगवान मुरुगन के उपासक थे।

हम अब एक ऐसे स्थान की ओर जा रहे हैं जहाँ पुरातत्व के अवशेष मिलते हैं।

अमरदीप सिंह: सेलई कातरगामम मंदिर के पास अब भी पांच सौ से सात सौ साल पुराने पत्थर पाये जाते हैं। ग्रामीणों का मानना है कि इस तरह के पत्थर पूरे इलाके में बिखरे हुये हैं जो विशेष उद्देश्य के लिये उपयोग किये जाते थे। उनका कहना है कि इस पत्थर का इस्तेमाल तीर्थयात्रियों के तंबू के लिये स्तंभ खड़ा करने के लिये किया जाता था।

इन निशानियों के सबूत होने की गुंजाइश को देखते हुये, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शायद गुरु नानक और भाई मरदाना यहां आये होंगे और तीर्थयात्रियों और रूहानियत के इच्छुक लोगों से गोष्टी करने के लिये ठहराव किया होगा।

हम अब सेलई कातरगामम मंदिर के पास उस स्थान की ओर बढ़ रहे हैं जहां गुरुद्वारा का निर्माण किया जा रहा है।

अमरदीप सिंह: श्रीलंका के पूर्वी तट पर कोई सिख आबादी नहीं है। यह दिल को छू जाने वाली बात है कि ku{~lmfm में गुरु नानक के आगमन की याद में सिखों और कोलंबो में रहने वाले पंजाबी हिंदुओं के संयुक्त प्रयासों से यह गुरुद्वारा बनाया जा रहा है, और श्रीलंका के स्थानीय तमिल इस मंदिर की देखभाल करते हैं।

मैं यहां सुदर्शन के साथ हूं जो श्रीलंकाई तमिल हैं और गुरु नानक के यहां आने की यादगार के तौर पर बनाये जा रहे गुरुद्वारे के निर्माण की देखरेख कर रहे हैं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने ku{~lmfm से श्रीलंका में दक्षिणी भाग में कातरगामा का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पद्चिन्हों पर कातरगामा जा रहे हैं, जो माणिक गंगा नदी के तट पर आबाद हैं। यह शहर तीर्थ यात्रियों के लिये एक पवित्र स्थान है क्योंकि यह हिंदुओं, बौद्धों और श्रीलंका के मूल निवासी 'वेदा' के लिये एक पवित्र स्थान है।

कातरगामा मंदिर पूजा का एक साँझा स्थान है। हिंदू इस मंदिर के देवता को भगवान शिव के पुत्र सुब्रमण्य के रूप में पूजते हैं। बौद्ध इस इमारत में खड़े पेड़ को बौद्ध वृक्ष मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस पेड़ को बौद्धों ने तीसरी शताब्दी में लगाया था और महात्मा बुद्ध ने इस स्थान को पवित्र किया था। मूल निवासी 'वेदा' का मानना है कि इस मंदिर का देवता रक्षक, फरिश्ता हैं।

आवउ वंञउ डुँमणी किती मित्र करेउ ॥
सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥
(राग मारू काफी, गुरु नानक)

दोहरे मन वाले मनुष्य भटकते रहते हैं चाहे वह अनेक गुणों से युक्त होते हैं।
उसी प्रकार चेतना से विरक्त आत्मा को सुकून नहीं मिलता। वह धीरज कैसे रखे?
(राग मारू काफी, गुरु नानक)

यह दिलचस्प है कि कातरगामा मंदिर में तीन अलग-अलग उद्देश्यों के साथ भक्त पूजा करते हैं। एक ही इमारत में मानव मन ने एक को दूसरे से अलग कर रखा है। मैं मानव मन के अनाड़ीपन पर सवाल उठाता हूं कि यह द्वैत के दर्द मे ग्रस्त रहता है और इत्तेफ़ाक की खुशी को अनदेखा करता है। गुरु नानक कहते हैं कि द्वैत अशांति का कारण है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कातरगामा से उत्तर की ओर सफ़र किया और नुवारा एलिया जाने के लिये पहाड़ी रास्ते पर चढ़ाई शुरू की।

गुरु नानक के पद्चिन्हो पर हम मनमोहक नज़ारों वाले शहर नुवारा एलिया जा रहे हैं। नुवारा एलिया का अर्थ है 'प्रकाश का शहर'। यह शहर महाकव्य रामायण से जुड़ा है।

हम ऐतिहासिक सीता अमन मंदिर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: नुवारा एलिया में इसी स्थान पर रावण ने सीता को बंदी बना कर रखा था। अपनी श्रीलंका यात्रा के दौरान गुरु नानक इस स्थान पर भी आये थे। उन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से एक गहरा संदेश दिया था,

सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥
रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥
(गुरु नानक)

सीता (राम से) और लक्ष्मण (उर्मिला से) ने बिछोड़ा सहन किया।
दस सिर वाले रावण से जब श्रीलंका लूटी गई तब वह रो पड़ा था।
(गुरु नानक)

इस संदेश का अर्थ स्पष्ट था कि महान जीवों को भी अपने कर्मों का किया भोगना पड़ता है। कार्यों से जुड़े इरादे सबसे सर्वोपर हैं।

'रामायण' की कथा यह है कि राजा रामचंद्र के जोशीले भक्त वानर देवता हनुमान, सीता की खोज में इन प्राकृतिक नज़ारों में पहुंचे जिन्हें 'अशोक वाटिका' कहा जाता था। उन्होंने एक अशोक के पेड़ से छलांग मारी जिसके नीचे सीता को बंदी बना रखा था। लोगों का मानना है कि इस जगह के पत्थरों पर बने निशान हनुमान के पैरों के निशान हैं।

रामचंद मारिओ अहि रावण ॥
भेद बभीखण गुरमुख परचाइण ॥
गुरमुख साइर पाहण तारे ॥
गुरमुख कोट तेतीस उधारे ॥
(गुरु नानक)

विवेक रूपी रामचंद्र ने अहंकार रूपी रावण को मार दिया है।
ज्ञान रूपी विभीषण ने भेद खोला है जो रूहानी आकांक्षी ने समझा है।
'गुरुमुख' ने संसारिक सागर की बाधाओं को
रूहानी साधक अपने विवेक से
करोड़ों प्रजातियों की रक्षा करता है।
(गुरु नानक)

गुरु नानक ने अयोध्या के राजा रामचंद्र की श्रीलंका के राजा रावण पर जीत को मनुष्य में चल रहे अच्छे और बुरे की लड़ाई के रूपक में इस्तेमाल किया है।

थिलनी रोड्रिगो: मुझे गुरु नानक के श्रीलंका के बारे में शबद मिले। मुझे नहीं पता था कि वह कभी श्रीलंका आये थे। मैंने गुरु नानक के शबद को 'सिंहाला' लोकधुन में गाया है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने नुवारा एलिया से सीतावाका का सफ़र किया जिसे अब अविसावेला कहते हैं।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम नुवारा एलिया से अविसावेल जा रहे हैं।

ऐसा कहा जाता है कि रामचंद्र की पत्नी सीता के नाम पर इस शहर का नाम सीतावाका रखा गया था क्योंकि रावण ने उन्हें यहां भी कैद रखा था।

वेगास की रणनीति और शहर के बदलते नामों से मुझे अहसास होता है कि हमारा अस्तित्व कितना नाजुकता से बंधा हुआ है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि सब कुछ गति में है और सिर्फ हमारे अस्तित्व को रोशन करने वाली शक्ति ही स्थायी है।

आदि अनील अनादि अनाहत जुग जुग एको वेस ॥
(जप, गुरु नानक)

आदि और अनिल ज्योत का न आदि है और न अंत। यह हमेशा एक ही भेस में है।
(जप, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अविसावेला से कोटे का सफ़र किया जो अब श्रीलंका की राजधानी कोलंबो का हिस्सा है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम ट्रेन से कोलंबो जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: इस स्टेशन का नाम 'मरादाना' है। इसका नाम मेरे मन में जिज्ञासा जगाता है। यह नाम गुरु नानक के ताउम्र साथी भाई मरदाना के नाम से मेल खाता है, जिन्होने उदासियों के दौरान उनके साथ सफर किया था।

'जन्मसाखियों' में गुरु नानक के साथी रबाबी भाई मरदाना को उनके सामने आने वाली कठिनाइयों के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। हर कठिनाई उनके रास्ते में आती है और अंत में वह कठिनाई को पार कर जाते हैं। मेरी विनम्र समझ में भाई मरदाना के संघर्ष मुझे मानवीय अस्तित्व के सामने आने वाली संसारिक चुनौतियों का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रतीत होता है।

गुरमुख अलिपत लेप कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥
मनमुख मुगध आगै चेतै नाही दुख लागै पछुताई ॥
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

रूहानियत से उन्मुख अप्रभावित रहता है और मोह का मैलापन उसे छुता नहीं है। वह आंतरिक शांति के अभयारण्य में रहता है।
मनमुख कभी आध्यात्मिकत रूप से आगे बढ़ने पर विचार नहीं करता। वह दुख और पश्चाताप में फंसा रहता है।
(राग प्रभाती, गुरु नानक)

रूहानियत का जिज्ञासू अंधकार को प्रकाश से चमकाकर अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास करता है। भाई मरदाने का जीवन रूहानी झुकाव वाले 'गुरुमुख' का अनुकरणीय उदाहरण है।

अमरदीप सिंह: कोलंबो अब श्रीलंका की राजधानी है जहां सिंहाली, ईसाई और बौद्ध रहते हैं।

गुरु नानक के दौर में श्रीलंका के द्वीप के पश्चिमी हिस्से में बुनियादी तौर पर बौद्ध मज़हब प्रमुख था।

सुभाष चावला: गुरु साहिब यहां कोटा के नौवें राजा धर्म पराक्रमबाहू के दौर में आये थे और उनके आपसी संवाद के प्रमाण मिलते हैं। मेरे ख़्याल में वह एक रहस्यमय व्यक्ति थे। वह अपने दौर के सबसे व्यापक रूप से प्रसारित मज़हबी शख्सियत थे।

अमरदीप सिंह: बुद्ध का जन्म इंडिया में हुआ था और बौद्ध मज़हब ईसा से पहले श्रीलंका पहुंच चुका था। बुद्ध ने जीवन जीने का तरीका सिखाया। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व या गैर-अस्तित्व के सवाल का निश्चित उत्तर नहीं दिया।

जब श्रीलंका के संघराजा, प्रमुख बौद्ध भिक्षु ने गुरु नानक के जाति, कर्मकांड और मूर्ति पूजा पर विचारों को सुना, तो उन्होंने उन्हें संघ में शामिल होने के लिये आमंत्रित किया। बौद्ध भिक्षुओं के साथ गोष्टी में गुरु नानक ने रूहानियत पर अपने मूल विचार प्रस्तुत किए।

जिन सेविआ तिन पाइआ मान ॥
नानक गावीऐ गुणी निधान ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुख परहर सुख घर लै जाइ ॥
गुरमुख नादं गुरमुख वेदं गुरमुख रहिआ समाई ॥
(जप, गुरु नानक)

निस्वार्थ भाव से सेवा करने वालों को सम्मान मिलता है।
नानक ने फ़रमाया कि सद्गुणों के ख़जाने पर विचार करो।
इसी को गायें, सुनें और इसके अर्थ को मन में बसा कर रखें।
दुखों को दूर करें और सुख को मन में बसने दें।
गुरुमुख के बोल गुणी हैं। गुरुमुख की बातों में विवेक है। गुरुमुख वहदत में लीन हैं। निस्वार्थ भाव से सेवा करने वालों को सम्मान मिलता है।
(जप, गुरु नानक)

कोई, किसी भी आस्था के रास्ते पर चलने का फ़ैसला कर ले लेकिन हर फ़लसफ़े में नैतिकता की जड़ें समान रूप से गहरी हैं। गुरु नानक ने फ़रमाया कि स्वयं को और दूसरों को प्रबुद्ध करने के इरादे को दिव्यता, इलाही विवेक और ऐकता के फल लगते हैं।

अमरदीप सिंह: बाबा नानक श्रीलंका आये थे और सदियों बाद श्रीलंका के इस द्वीप पर गुरु नानक के नामलेवा दिखने लगे। पहले पाकिस्तान के इलाके से सिंधी आये थे और उन्नीस सौ सैंतालीस के बाद पिछले सात दशकों से कई पंजाबी आये हैं। कोलंबो की नानक नामलेवा संगत मूल रूप से इन दो समुदायों में से है।

हम श्रीलंका के सिंधी एसोसिएशन जा रहे हैं जो इबादत के लिये सांझी जगह है। उनकी मज़हबी परंपरा में गुरु नानक का एक अविभाज्य स्थान है।

बाबीहा अंमृत वेलै बोलिआ ताँ दर सुणी पुकार ॥
(सलोक, गुरु अमर दास)

जब सुबह-सवेरे बंबीहा (आत्मा) बोलता (सोच-विचार) है तब उसकी पुकार इलाही दरबार में सुनी जाती है।
(सलोक, गुरु अमर दास)

वंदना बख्शानी: सिंधी बिरादरी की गुरु नानक में बहुत आस्था है। आप जानते हैं कि हम पाकिस्तान से हैं। नानक इनमें समाये हुये हैं। यह इनका मज़हबी मत है। हम अन्य देवताओं के रीति-रिवाज़ों का पालन करते हैं और गुरु नानक को भी मानते हैं। मेरा पालन-पोषण ऐसे परिवार में हुआ है जहां हर खुशी-गमी के मौके पर शुकराने के तौर पर अखंड पाठ किया जाता है। हर रविवार को हम आसा की वार का गायन करते हैं। यह बरसों का रिवाज़ है। हम सुखमनी साहिब की पंक्तियां पढ़ते हैं जप साहिब की पांच पौड़ियां पढ़ते हैं। हम 'आनंद साहिब' का पाठ करते हैं। हम 'आरती' और 'अरदास' करके वाक लेते हैं।

कंनी सूतक कंन पै लाइतबारी खाहि ॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुर जाहि ॥
(गुरु नानक)

जब कानों को खोटे बोल सुनाई देते है तब बेइतबारी होती है।
नानक ने फ़रमाया कि उस समय मनुष्य की आत्मा वंदना में फंस जाती है और रूहानी मौत हो जाती है।
(गुरु नानक)

कमलेश भारद्वाज:

मीराँ दानाँ दिल सोच ॥
मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥

(गुरु अर्जन)

ओ ज्ञानी, उदार दिल से सोच-विचार करो।
जिसके तन-मन में मुहब्बत की सच्ची सोच बसती है उनकी नकारात्मकता की सोच से कैद कट जाती है।
(गुरु अर्जन)

श्री वाहिगुरु जी का खालसा। श्री वाहिगुरु जी की फ़तेह। सतनाम, सतनाम, सतनाम जी। नमस्ते। सत श्री अकाल। मैं महाराज कमलेश भारद्वाज हूँ। हालांकि मैं एक सिंधी ब्राह्मण हूं लेकिन जब से मैं श्रीलंका आया हूं मैंने देखा कि यहां सभी देवताओं का मंदिर है। उनके साथ वेद भी हैं। मैंने देखा कि एक गुरुद्वारा भी है। मैंने पहले कभी नहीं देखा था कि मंदिर में गुरुद्वारा भी होता है। मैं यहां आया तो मुझे बहुत अच्छा लगा। यहां मुझे गुरु ग्रंथ साहिब मिले। इससे पहले मैं गुरु नानक के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। हम गुरु नानक के ग्रंथ को पढ़ते रहे। जैसे-जैसे मैंने पढ़ा, मेरी दिलचस्पी बढ़ती गई। हर मज़हब में नि:स्वार्थ सेवा को सबसे महान बताया गया है। गुरु नानक का संदेश है सेवा करना।

सुनीता जीवातराम: श्रीलंका के हर सिंधी घर में 'गुरु ग्रन्थ' है। 'गुरु ग्रन्थ' के साथ में 'गीता' भी है। गुरु का भी सम्मान है और 'गीता' का भी सम्मान है। हर सिंधी घर में 'गुरु ग्रन्थ' है।

नारायण चतुरानी: मेरे माता-पिता कहते थे कि हम 'सिंधियों' ने सबसे पहले गुरु नानक को इस द्वीप पर वापस लाया था। चाहे उन्होंने सदियों पहले इस देश का दौरा किया था, परन्तु हम फक़र करते हैं कि हमने गुरु नानक की शिक्षाओं को कोलंबो, श्रीलंका मे पुनर्जीवित किया है।

अमरदीप सिंह: नमस्ते। आप जी का नाम क्या है?

कविता: हैं?

अमरदीप सिंह: आप जी का नाम क्या है?'

कविता: कविता

अमरदीप सिंह: कविता जी, आपकी उम्र कितनी है?

कविता: पचहत्तर- छिहत्तर से अधिक

अमरदीप सिंह: आप क्या पढ़ रहे हो?

कविता:जपजी साहिब पढ़ रही हूँ।

ੴ

सति गुर प्रसाद ॥
करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद ॥
॥ जप ॥
आदि सच जुगाद सच ॥
है भी सच नानक होसी भी सच ॥
(गुरु नानक)

कर्ता हाज़रा-हज़ूर है। रहबर की रहमत से कृपा होती है।
सृष्टि में व्यक्तिगत है।
बेख़ौफ़ है। तेरे-मेरे के चक्कर से ऊपर है।
युगों-युग अटल है।
जन्म-मरण के चक्र से ऊपर है। वह आप ही रोशन है।
रहबर की रहमत से कृपा होती है।
जप।
वह आदि समय से ही सत्य है और आज भी सत्य है।
नानक ने फ़रमाया कि वह सदा सच रहेगा।
(गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: यह सिंधी लिपि में छपी हुई 'आसा की वार' पढ़ रहीं हैं।

(कीर्तन गायन)

सिंधी मंदिर से निकलते हुये मुझे यह देखकर खुशी हुई कि यह बिरादरी गुरु नानक के साथ अपने संबंध बनाये रखने के लिये गंभीर प्रयास कर रही है।

हम अब कोलंबो के गुरुद्वारे जा रहे हैं।

(कीर्तन गायन)

मनविंदर सिंह: हम जानते हैं कि गुरु नानक देव जी श्रीलंका आये थे लेकिन इस कथा के इलावा उनकी उदासियों से जुडी कोई निशानी नहीं है। हम श्रीलंका में उनके बारे ज़्यादा नहीं जानते हैं। शायद उस तरह यहां सेवा-संभाल के लिये संगत नहीं थी जैसे इंडिया और पाकिस्तान में सेवा-संभाल के लिये संगत थी।

(कीर्तन गायन)

हरिण: गुरु नानक दरबार में लोग एक-दूसरे से इतना प्यार करते हैं कि 'दरबार' में सभी को एक होने का अहसास होता है। हमारी पीढ़ी को गुरु नानक के बारे में ज़्यादा नहीं पता। यह 'दरबार' का अहसास हमारे लिये बहुत ही अनोखा है। यह हमें एक साथ जोड़ता है और हमें विश्वास में बांधता है।

गुरु नानक की श्रीलंका की उदासी के बारे में जानने के लिये हम अर्तिका अरोड़ा के घर जा रहे हैं।

आर्तिका अरोड़ा: मैं सन दो हज़ार में श्रीलंका आई थी। मेरी जिज्ञासा थी कि गुरु नानक की श्रीलंका में उदासी के भौतिक संकेतों को खोजा जाये। वह मेरी खोज थी। इसी दौरान मेरे सामने 'ग्रंथ साहिब' का शबद आया।

राम झुरै दल मेलवै अंतर बल अधिकार ॥
बंतर की सैना सेवीऐ मन तन जुझ अपार ॥
(गुरु नानक)

झुरते हुये राजा राम ने स्वयं को उन गुणों से जोड़ा जो मन में दिलेरी और इंसाफ़ जगाते हैं।
वानरों की सेना संयम और फ़ुर्ती की नुमाइंदगी करती है जो सच्चे युद्ध में तन-मन की सेवा निभाती है।
(गुरु नानक)

यहां राम के श्रीलंका आगमन का संदर्भ दिया गया है। गुरु नानक देव जी के इस शबद ने मेरी उत्सुकता बढ़ा दी कि वह यहां क्यों आये थे। उनकी खोज क्या थी? वह लोगों से गोष्टी करने जाते थे। उनके साथ विचार

करते थे। उन्होंने लोगों की मान्यताओं को समझने और अपने विश्वासों को सांझा करने के लिये यात्रा की। शायद उनकी यहीं चाहत उन्हें श्रीलंका ले आई। वह यहां हमारे बीच में बसे हैं, हमारे दिलों में और अपनी शिक्षाओं में बसे हैं। उन्होंने हर जगह वहदत, ऐकता और करुणा का उपदेश दिया। मनुष्य एक-दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करे।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कोलंबो के बाहर की ओर बसे कोटे से उत्तर की तरफ अनुराधापुरा का सफ़र किया।

गुरु नानक के पद्चिन्हों पर हम अनुराधापुरा जा रहे हैं जो श्रीलंका के प्राचीन शहरों में शामिल है। अनुराधापुरा सिंहाली सभ्यता के खंडहरों के उत्कृष्ट संरक्षण के लिये पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। गुरु नानक के दौर में यह थिरावडा बौद्ध मत का केंद्र था।

अनुराधापुरा में हमारा उद्देश्य यहां के पुरातत्व संग्रहालय में जाना है जहां हम पंद्रहवीं शताब्दी के राजा धर्मपराकर्मा बाहू नौवें के समय के पत्थर की शिला देखना चाहते हैं।

हाल के दिनों में, कई सिख लेखकों ने दावा किया है कि पत्थर की शिला नंबर एम-एक सौ ग्यारह के ऊपर 'नानक आचार्य' उकेरा हुआ है।

हम अनुराधापुरा में पुरातत्व संग्रहालय की प्रमुख, दीपाली से उनके दफ़्तर में मिले। उनके दफ़्तर में पहले हमने शिला नंबर एक सौ ग्यारह के बारे में पूछताछ की।

दीपाली अब हमें शिला नंबर एक सौ ग्यारह दिखाने ले जा रहीं हैं।

दीपाली: क्या यह शिला नंबर एक सौ ग्यारह है?

अमरदीप सिंह: दीपाली जी, इस शिला पर कुछ पढ़ा नहीं जाता परन्तु कुछ धुंधली सी इबारत है। हम कुछ नहीं पढ़ सकते। क्या यह पहले से ऐसा ही था?

दीपाली: जी

अमरदीप सिंह: यह दिलचस्प है कि कुछ लिखतें यह दावा करतीं हैं कि इस शिला पर 'गुरु नानक आचार्य' लिखा हुआ है। जब मैं इसे देख रहा हूं, तो इस पर पढ़ने वाला कुछ नहीं है और आप बता रहीं हैं कि संग्रहालय में ऐसी कोई चीज़ नहीं है। आप कह रहीं हैं कि जब यह मीनार संग्रहालय में आई तो उस पर कुछ भी नहीं लिखा था।

दीपाली: नहीं।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अनुराधापुरा से बंदरगाह वाले शहर मन्नार का सफ़र किया।

गुरु नानक के पद्चिन्हों पर चलते हुये हम अनुराधापुर से मन्नार जा रहे हैं।

अनुराधापुरा से मन्नार द्वीप तक का पूरा इलाका सूखा और बंजर जजीरानुमा है।

इस इलाके में एक स्तनपायी जानवर, सुनहरा सियार मिलता है, जो झुंड में घूमता है। यह चतुर, चालाक और हठी जानवर माना जाता है। इस नाख़ुशगवार इलाके के सफ़र के दौरान गुरु नानक और भाई मरदाना को खाने-पीने के लिये कुछ नहीं मिला। उनकी नज़र सियारों के झुंड पर पड़ी जो एक तरफ जा रहे थे। गुरु नानक और भाई मरदाना ने अनुमान लगाया कि सियार अपनी प्यास बुझाने के लिये जा रहे हैं। वह उनके पीछे-पीछे एक तालाब पर पहुंच गये।

ज्ञान इंद्रियां गौर करने और जज़्ब करने के लिये बनी हैं। इन इंद्रियों में कुदरत के इशारों को बूझने और मार्गदर्शन हासिल करने की शक्ति होती है।

इस क्षमता को कारगर बनाने के लिये हर हालत का सामना करने और उससे सीखने वाली सोच ज़हन में बसानी पड़ती है।

आपे माछी मछुली आपे पाणी जाल ॥
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदर लाल ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

वह ही मछुआरा है और वह ही मछली है। वह ही पानी है और वह ही जाल है।
वह ही जाल है और वह ही चारा है। सभी के अंदर इलाही अंश है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि सृजनहार ने बड़े मकसद का ध्यान रख कर हर हालत और उसके परिणामों की योजना बनाई है। कई बार मानव मन को इसका अंदाज़ा नहीं होता।

मन्नार ज़िले में हम तलाईमन्नार जा रहे हैं जो 'सेतु बंध' द्वीपों का इलाका है।

'सेतु बंध' को 'राम सेतु' या 'एडम्स ब्रिज' भी कहा जाता है जो द्वीपों की एक श्रृंखला है। द्वीपों की यह श्रृंखला श्रीलंका में मन्नार ज़िले और इंडिया के रामेश्वरम ज़िले में धनुषकोडी के बीच स्थित है।

'सेतु बंध', द्वीपों से बना करीब अड़तीस किलोमीटर लम्बा पुल है।

'सेतु बंध' का उल्लेख महाकाव्य 'रामायण' में भी आता है जिसमें बंदरों की सेना, एक पुल का निर्माण करती है, जिसके माध्यम से रामचंद्र अपनी पत्नी सीता को बचाने के लिये श्रीलंका पहुंचते हैं।

गुरु नानक ने 'सेतु बंध' के संबंध में बहुत गहरा फ़लसफ़ियाना संदेश दिया है। रूपक के तौर पर यह मानव सुरति के इलाही सुरति के साथ संबंध की प्रस्तुति है। एक ऐसा सेतु बंध जो नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलने में मदद करता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने श्रीलंका के मन्नार से किश्ती द्वारा इंडिया में धनुषकोडी का सफ़र किया।

गुरमुख बाँधिओ सेत बिधातै ॥
लंका लूटी दैत संतापै ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

रूहानियत के अग्रदूतों ने हाज़रा-हज़ूर को समझने के लिये एक सेतु का निर्माण किया है।
लंका (अहंकार) लूटी गई है। दानव (दोष) पर विजय प्राप्त हुई है।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १४: सेतु बंध (तब्दीली का पुल)

चर्चा बिंदु श्रीलंका की यात्रा के ऐतिहासिक महत्व और इस यात्रा के दौरान गुरु नानक के संदेशों के दार्शनिक पहलुओं का अन्वेषण करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। विभिन्न धार्मिक समुदायों और १५वीं शताब्दी के श्रीलंका के राजनीतिक व्यक्तियों के साथ उनके वार्तालाप का अध्ययन करके, हमें इस बात की मूल्यवान समझ मिलती है कि उनके सार्वभौमिक संदेश ने सांस्कृतिक और धार्मिक सीमाओं को कैसे पार किया। दार्शनिक प्रश्न हमें गुरु नानक की स्थायी रुहानी अवधारणाओं पर गहराई से विचार करने के लिए आमंत्रित करते हैं, विशेष रूप से उनकी एकता को विविधता से ऊपर रखने की सीख, बाहरी पहचान से परे जाने की विचारधारा और आंतरिक रूपांतरण के महत्व पर दिया गया जोर। ये ऐतिहासिक और दार्शनिक अन्वेषण हमें इस बात की सराहना करने में मदद करते हैं कि श्रीलंका की उनकी यात्रा अंतरधार्मिक वार्तालाप और रुहानी आदान-प्रदान का एक अद्भुत अध्याय कैसे रही—एक विरासत जिसे आज भी द्वीप पर विभिन्न समुदायों द्वारा सम्मानित किया जाता है, भले ही उनकी यात्रा के भौतिक प्रमाण सीमित हों।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **१५वीं शताब्दी के श्रीलंका के धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य ने गुरु नानक की बातचीत को कैसे प्रभावित किया?**

इस एपिसोड में वर्णन किया गया है कि १५वीं शताब्दी के दौरान श्रीलंका मुख्य रूप से बौद्ध था। केवल कुछ क्षेत्र, विशेष रूप से द्वीप के उत्तर-पूर्वी भाग में, हिंदू 'शैव' अनुयायियों द्वारा आबाद थे। यह विविध धार्मिक वातावरण गुरु नानक को अंतरधार्मिक वार्तालाप करने के अवसर प्रदान करता था। एपिसोड में उनके राजा शिव नभ (पराराजशेखरन), जो शिव के भक्त थे, के साथ उनके वार्तालाप का उल्लेख किया गया है, साथ ही बौद्ध भिक्षुओं, जिनमें संघराज (वरिष्ठ बौद्ध भिक्षु) भी शामिल थे, से हुई चर्चा का वर्णन है। कटारगामा में, गुरु नानक ने एक ऐसे समन्वित मंदिर का दौरा किया जिसे हिंदू, बौद्ध और स्थानीय वेद्दा समुदाय के लोग समान रूप से पूजनीय मानते थे। यह बहुपंथीय धार्मिक वातावरण गुरु नानक की दार्शनिक विचारधारा प्रस्तुत करने की पद्धति को कैसे प्रभावित कर सकता था, और इन वार्तालापों से हम उनके अंतरधार्मिक संवाद के तरीकों के बारे में क्या सीख सकते हैं?

२. गुरु नानक की श्रीलंका यात्रा के क्या प्रमाण मौजूद हैं, और इस स्मृति को सदियों से कैसे संरक्षित किया गया है?

एपिसोड में गुरु नानक की यात्रा के भौतिक प्रमाणों के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें बताया गया है कि जाफना में गुरु नानक की यात्रा के संबंध में कोई भौतिक स्मारक नहीं है, जबकि कुरुक्कलमदम में एक गुरुद्वारा बनाया गया है, जिसे सिखों, कोलंबो के कुछ पंजाबी हिंदुओं और स्थानीय श्रीलंकाई तमिलों के सहयोग से निर्मित किया गया है। एपिसोड में अनुराधापुर पुरातात्त्विक संग्रहालय में पत्थर की शिला M111 पर 'नानक आचार्य' नामक एक शिलालेख होने के दावे का उल्लेख है, लेकिन जांच करने पर उस पर कुछ भी पठनीय नहीं पाया गया। सदियों बाद, कोलंबो में सिंधी समुदाय ने द्वीप पर गुरु नानक की रुहानी शिक्षाओं को पुनर्जीवित करने में गर्व महसूस किया। यह स्मरण और संरक्षण का यह तरीका विभिन्न संस्कृतियों और शताब्दियों में ऐतिहासिक स्मृति को संरक्षित करने की चुनौतियों को क्या दर्शाता है, और सीमित भौतिक प्रमाणों की भरपाई के लिए मौखिक परंपराएँ कैसे सहायक हो सकती हैं? क्या कुछ लेखकों द्वारा M111 शिला पर शिलालेख के बारे में आधुनिक दावे गुरु नानक की यात्राओं को एक व्यापक संदर्भ में प्रस्तुत करने के उनके विश्वास प्रणाली का एक प्रयास हैं?

३. राजा शिव नभ की गुरु नानक से बातचीत उस समय की बहुसांस्कृतिक धार्मिक विनिमय को कैसे दर्शाती है?

एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि लाहौर के व्यापारी भाई मनसुख ने श्रीलंकाई राजा शिव नभ को गुरु नानक और उनकी विचारधारा के बारे में बताया। जब गुरु नानक श्रीलंका पहुंचे, तो राजा ने उनकी सत्यता की परीक्षा लेने के लिए सुंदर युवतियों को उनके पास भेजा, ताकि उनकी रुहानी स्थिति को परखा जा सके। गुरु नानक इस परीक्षा से अप्रभावित रहे, जिससे राजा को उनके रुहानी दर्जे पर विश्वास हो गया। इसके बाद, राजा शिव नाभ ने गुरु नानक से उनकी धार्मिक पहचान के बारे में पूछा, यह जानने का प्रयास किया कि क्या वे 'योगी' (संन्यासी) या 'पंडित' (विद्वान पुरोहित) हैं, और उनकी जाति क्या है। यह संवाद १५वीं शताब्दी की धार्मिक और सामाजिक वर्गीकरण की महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को उजागर करता है। यह आदान-प्रदान उस युग के रुहानी शिक्षकों के लिए सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने की चुनौतियों और अवसरों को कैसे दर्शाता है?

४. गुरु नानक की विशिष्ट वेशभूषा ने उनकी श्रीलंका यात्रा में क्या भूमिका निभाई?

'विलायतवाली जनमसाखी' के अनुसार, श्रीलंका की यात्रा के दौरान, गुरु नानक ने रस्सियों से सिर को ढका, लकड़ी की खड़ाऊं पहनी और अपने माथे पर सिन्दूर लगाया। एपिसोड में बताया गया है कि गुरु नानक ने जानबूझकर ऐसे वस्त्र पहने जिससे लोग उन्हें किसी एक धार्मिक पहचान से न जोड़ सकें। इस

नीति का उद्देश्य जिज्ञासा उत्पन्न करना था, ताकि वे विभिन्न रुहानी चिंतकों के साथ वार्तालाप आरंभ कर सकें। क्या यह जानबूझकर धुंधली पहचान गुरु नानक के विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच सेतु बनाने के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने में सहायक रही, और यह अंतरधार्मिक वार्तालाप के लिए आज क्या सीख प्रदान करती है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. राजा शिव नभ को गुरु नानक की प्रतिक्रिया पारंपरिक धार्मिक पहचान की अवधारणाओं को कैसे चुनौती देती है?

जब राजा शिव नाभ ने गुरु नानक से उनकी जाति और धार्मिक पहचान के बारे में पूछा, तो उन्होंने एक सबद के माध्यम से उत्तर दिया, जिसमें उन्होंने 'योगी' (योग साधक) की पुनर्परिभाषा की। उन्होंने बताया कि सच्चे 'योगी' वे होते हैं जो आत्मचिंतन में सक्षम होते हैं, सत्यनिष्ठ बने रहते हैं और अधर्म से प्रभावित नहीं होते। यह विचारधारा १५वीं शताब्दी के दक्षिण एशिया की सामाजिक वर्गीकरण की प्रणालियों को कैसे चुनौती देती है, और धार्मिक पहचान को अधिक सार्वभौमिक रूप से समझने के लिए इसके क्या निहितार्थ हैं?

२. गुरु नानक ने 'सेतु बंध' (पुल) को रुहानी जागरूकता के प्रतीक के रूप में कैसे प्रस्तुत किया?

एपिसोड में बताया गया है कि गुरु नानक ने 'सेतु बंध' को मानव चेतना और परम चेतना के बीच जोड़ने के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। इस पुल को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर बदलाव का प्रतीक माना गया है। यह रूपक गुरु नानक के रुहानी विकास के दृष्टिकोण को कैसे दर्शाता है, और उनकी विचारधारा में भौतिक और रुहानी समझ के बीच क्या संबंध प्रकट करता है?

३. गुरु नानक ने रामायण के वृत्तांत को रुहानी शिक्षाओं के लिए कैसे पुनःव्याख्यायित किया?

एपिसोड में गुरु नानक का सबद उद्धृत किया गया है: रामचंद (सजग मन) ने रावण (अहंकार) का वध किया। बिभीषण (बुद्धि) आध्यात्मिक मार्ग की पहचान करता है। इसमें बताया गया है कि अयोध्या के राजा रामचंद्र और श्रीलंका के राजा रावण के बीच की लड़ाई को गुरु नानक ने आंतरिक आध्यात्मिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया है, जहाँ अच्छाई की बुराई पर विजय अंतर्मन की शुद्धि का प्रतीक है। इस पुनर्परिभाषित वृत्तांत के माध्यम से गुरु नानक ने अमूर्त रुहानी अवधारणाओं को सांस्कृतिक रूप से परिचित संदर्भों के जरिए सुलभ बनाने की पद्धति कैसे विकसित की, और यह उनके आंतरिक रूपांतरण के दर्शन को कैसे प्रकट करता है?

४. 'गुरमुख' और 'मनमुख' के बीच गुरु नानक ने क्या अंतर बताया?

गुरु नानक कहते हैं कि 'गुरमुख' (रुहानी रूप से जागरूक व्यक्ति) मोह-माया की मलिनता से मुक्त रहते हैं। वे सदा आंतरिक शांति के आश्रय में रहते हैं। दूसरी ओर, 'मनमुख' (मन केंद्रित व्यक्ति) रुहानी उन्नति पर ध्यान नहीं देते और चिंता व पश्चाताप से ग्रसित रहते हैं। एपिसोड में बताया गया है कि 'गुरमुख' वह होता है जो अपने विवेक को अज्ञानता के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयास करता है। भाई मरदाना को एक 'गुरमुख' के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह अवधारणा गुरु नानक के रुहानी विकास के ढांचे को कैसे स्पष्ट करती है, और इसका दैनिक जीवन में क्या व्यावहारिक प्रभाव हो सकता है?

५. गुरु नानक ने द्वैतवाद की अवधारणा और इसके मानवीय चेतना पर प्रभाव को कैसे संबोधित किया?

कातरगामा मंदिर, जो हिंदू, बौद्ध और स्थानीय वेद्दा समुदायों द्वारा समान रूप से पूजनीय है, में दर्शन के दौरान कथावाचक इस तथ्य पर विचार करता है कि एक ही परिसर में मानव मन ने धार्मिक आधार पर विभाजन कर लिया है। इसे गुरु नानक की विचारधारा से जोड़ा गया है, जो यह बताती है कि द्वैतवाद अशांति का कारण है। एक सबद में गुरु नानक कहते हैं कि द्विचित्त (द्वैध विचारधारा वाला) व्यक्ति सदैव विचलित रहता है, भले ही वह कितनी भी सकारात्मक प्रवृत्तियों को अपनाए। इसी प्रकार, जो आत्मा अपने उच्चतम चैतन्य से अलग हो जाती है, उसे कभी शांति नहीं मिलती। गुरु नानक की यह विचारधारा द्वैतवाद से ऊपर उठने का प्रयास कैसे करती है, और यह धार्मिक मतभेदों को संबोधित करने में आज किस प्रकार प्रासंगिक हो सकती है?

६. गुरु नानक ने 'सेतु बंध' को रूपांतरण के पुल के रूप में कौन सा दार्शनिक संदेश दिया?

'सेतु बंध', जिसे 'राम सेतु' या 'एडम्स ब्रिज' भी कहा जाता है, श्रीलंका के तलाईमन्नार से भारत के धनुषकोडी तक फैला हुआ ४८ किलोमीटर लंबा एक प्राकृतिक चूना पत्थर की जलछाड़ी का पुल है। इसका सांस्कृतिक महत्व रामायण से जुड़ा है, जिसमें इसे भगवान राम की वानर सेना द्वारा बनाया गया एक पुल बताया गया है, जिससे वे लंका में जाकर रावण से सीता को मुक्त करा सके। गुरु नानक ने इस पौराणिक कथा को रुहानी दृष्टिकोण से समझाया, जहाँ 'सेतु बंध' को 'परिवर्तन का पुल' कहा गया। उन्होंने इसे आंतरिक रूपांतरण का प्रतीक बताया, जो व्यक्ति को सांसारिक मोह-माया के सागर से पार कर सकारात्मकता की ओर ले जाता है। उनके अनुसार, रुहानी रूप से उन्नत व्यक्ति इस पुल का निर्माण करते हैं ताकि वे सर्वव्याप्त परमचेतना को समझ सकें। आज के विभाजित समाज में 'पुल-निर्माण' की यह अवधारणा व्यक्तिगत विकास और सामाजिक समरसता को कैसे दिशा प्रदान कर सकती है? हमारे भीतर कौन-कौन से आंतरिक पुलों को निर्मित करने की आवश्यकता है ताकि हम अपने द्वैतवाद

से ऊपर उठ सकें? क्या यह रूपक धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विभाजनों को पाटने के लिए भी प्रासंगिक हो सकता है?